GAP भाषा
A MULTILINGUAL JOURNAL OF RESEARCH
(ISSN – 2582-8770)
Globally peer-reviewed and open access journal.

गरासिया गौर

अशोक कुमार

असिस्टेंट प्रोफ़ेसर, सरकारी कला एवं विज्ञान महाविद्यालय, डेडियापाडा एवं शोधार्थी, इतिहास विभाग गुजरात यूनिवर्सिटी, अहमदाबाद-09, Ashokdhamu.suthar@gmail.com

सारांश

सांस्कृतिक विविधताओं के कारण राजस्थान को रंगीला राजस्थान के नाम से जाना जाता है। राजस्थान के हर गांव एवं ढाणी में निवास करने वाली विभिन्न जातियां राजस्थान की सांस्कृतिक धरोहर को समृद्ध करती हैं। ऐसे ही प्राकृतिक सौंदर्य से भरपूर राजस्थान का दक्षिणी क्षेत्र आदिकाल से ही अजब एवं अनूठी सांस्कृतिक विशेषताओं का क्षेत्र रहा है। अरावली की वादियों से आच्छादित यह क्षेत्र अपने साथ अजब-गजब जन जातीय परंपराओं को संजोए हुए हैं। ऐसे ही रमणीय स्थल में विचरण करने वाली गरासिया जनजाति की सांस्कृतिक परंपराएं जो त्योहार मेलों एवं नृत्य की घुंघरुओं की ध्वनि से इस क्षेत्र को गुंजायमान बनाती है। गरासिया जनजाति राजस्थान की तीसरी सबसे बड़ी जनजाति है। जो राजस्थान एवं गुजरात के सीमाई इलाके में अरावली की सुरमय पहाड़ियों में निवासरत है। इस जनजाति को राजपूत पिता एवं वनवासी मां की संतान माना जाता है। अतः इनमें कही अनोखी सांस्कृतिक विशिष्टताएं देखने को मिलती हैं जो अन्य जनजाति समाज में नहीं है। इनमें से ही एक विशिष्ट सांस्कृतिक परंपरा है गणगौर या गौर, जिसका गरासिया सामाजिक एवं धार्मिक जीवन में विशेष महत्व है। गणगौर जिसे गरासिया अपनी भाषा में केवल गौर के नाम से जानते, जो इस समाज की महिला सशक्तिकरण एवं स्वतंत्रता की भावना को दृष्टिगत करती हैं। 21 दिवसीय अनुष्ठान में गौर पूजा, व्रत, नृत्य गान के साथ मेले में युवा लड़के लड़कियां अपने जीवनसाथी का चुनाव भी करते हैं। मुख्यतः गौर त्योहार एवं मेला युवाओं के मिलन का अवसर है जिसमें वे एक दूसरे से परिचित होकर जीवन की नई राह चुनते हैं।

संकेताक्षर : *गौर, गरासिया, सियावा, दापा, लिव-इन-रिलेशनशिप, ईसर, गोलावण, खैचणा, प्रेम विवाह।*

चित्र - 1. सियावा गौर मेले के दौरान गरासिया लोगों के साथ

गरासिया जनजाति राजस्थान के दक्षिणांचल में अरावली की ऊंची पर्वत श्रृंखलाओं एवं घने वनों से आच्छादित गुजरात के सीमाई इलाकों में निवासरत है। भारत में सर्वाधिक गरासिया जनजाति राजस्थान में निवास करती है इसके बाद दूसरे स्थान पर गुजरात है। यह राजस्थान के सिरोही जिले की आबूरोड तहसील के भाखर क्षेत्र, पिंडवाड़ा, रेवदर तहसीलों में, पाली जिले की बाली व देसूरी तहसील में, उदयपुर जिले की गोगुंदा, कोटड़ा तहसील में तथा आंशिक रूप से बांसवाड़ा, डूंगरपुर एवं प्रतापगढ़ जिला में निवासरत है। गरासियों के निवास क्षेत्र पट्टों में बंटे हुए हैं। इनमें सर्वाधिक गरासिया सिरोही जिले के भाखर पट्टे एवं पिंडवाड़ा पट्टे में निवासरत है। यदि इस क्षेत्र को गरासियों का

https://www.gapbhasha.org/

GAP भाषा
A MULTILINGUAL JOURNAL OF RESEARCH
(ISSN – 2582-8770)
Globally peer-reviewed and open access journal.

घर कहा जाए तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। राजस्थान के अलावा गरासिया जनजाति गुजरात के बनासकांठा, साबरकांठा आदि जिलों में निवासरत है।

गरासिया जनजाति के लोगों को विद्वान गिरासिया, ग्रासिया, गराइया, गराया आदि अलग-अलग नामों से जानते हैं। गरासियों का गांव छोटी-छोटी इकाइयों में बंटा होता है जिससे 'फली' के नाम से जाना जाता है जिसमें उनके कुटुंब के व्यक्ति रहते हैं। इस जनजाति की अपनी स्वतंत्र बोली है जिसे 'गिरासी' बोली के नाम से जाना जाता है। गरासिया जनजाति विशिष्ट सांस्कृतिक परंपराओं, जीवन जीने के तरीकों, अनूठी सामाजिक रीति-रिवाजों, चटकीले रंग बिरंगे अंग्रेजी नाम युक्त वस्त्र परंपरा, अनेक प्रकार के धार्मिक एवं आर्थिक मान्यताओं तथा अपने स्वाभिमानी एवं गौरव युक्त इतिहास के कारण अन्य जनजातियों से अलग विशिष्ट पहचान रखती हैं।

चित्र - 2. गरासिया गौर मेला सियावा का एक दृश्य

खेती से संबंध होने के कारण गरासियों के त्यौहार फसल से संबंधित होते हैं तथा इनके मेले अधिकतर गर्मियों के अवकाश के समय भरते हैं। जब खेती और जंगल के कार्य से ये लोग निवृत्त हो जाते हैं। इनके त्यौहार एवं मेले सादगी, सजगता एवं सरलता के साथ अपने विशिष्ट सांस्कृतिक परंपराओं, आस्था एवं धार्मिक विश्वासों के जीवंत दर्शन होते हैं। गरासिया लोगों के मेले एवं उत्सव वर्ष भर आयोजित होते रहते हैं। हिंदू धर्म के अनुयाई गरासिया शिव, विष्णु, जगदंबा, भैरव, एवं अन्य देवी-देवताओं में गहरी आस्था रखते हैं। इनके मेले एवं त्योहार इसी आस्था पर आधारित है। आज भी इन्होंने अपनी सांस्कृतिक परंपरा, गीत-नृत्य की परंपरा, धार्मिक मान्यता एवं आस्था तथा अनोखी विवाह परंपरा को विभिन्न त्योहार एवं मेलों के माध्यम से संजोए रखा है। इन्हीं विशेषताओं की आकर्षक झलक गौर पूजा एवं गौर मेला सियावा में दृष्टिगत होती है। गौर का त्योहार गरासिया जनजाति में बड़े ही हर्ष एवं उल्लास से मनाया जाता है इस त्योहार की समाप्ति पर सियावा, जिला सिरोही, राजस्थान में मेले का आयोजन होता है जिसमें अविवाहित लड़के-लड़कियां अपनी पसंद के जीवन साथी का चुनाव करते हैं।

अध्ययन का उद्देश्य

प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य राजस्थान एवं गुजरात के सीमावर्ती क्षेत्र में निवासरत गरासिया जनजाति के गौर त्योहार तथा सियावा गौर मेले से संबंधित सांस्कृतिक परंपराओं तथा विशेषताओं जैसे - गौर व्रत, गौर पूजा, अनोखी विवाह परंपरा, खैचणा विवाह, नृत्य-गान तथा इन से संबंधित विभिन्न रस्मों-रिवाज की अनोखी विरासत से परिचित करवाना। जो आधुनिक सभ्य समाज में भी देखने को नहीं मिलती।

शोध पद्धति:-

प्रस्तुत शोध पत्र लेखन हेतु राजस्थान राज्य के सिरोही जिले की आबू तहसील के सियावा गाँव में जलाईया फली की गौर पूजा तथा आबूरोड-अंबाजी मार्ग पर स्थित नाले पर 21 अप्रैल 2022 की वैशाख कृष्ण पंचमी को आयोजित गरासिया मेले का साक्षात्कार एवं प्रत्यक्ष निरीक्षण और इस समाज के वयोवृद्ध एवं युवा लोगों से उनकी सांस्कृतिक परंपरा, रीति रिवाज, अनुभव एवं स्मृति(मौखिक इतिहास) का उपयोग किया गया है।

https://www.gapbhasha.org/

GAP भाषा
A MULTILINGUAL JOURNAL OF RESEARCH
(ISSN – 2582-8770)
Globally peer-reviewed and open access journal.

गौर पूजा

चित्र - 3. गौर का व्रत लेती गरासिया यूवतियां

राजस्थान के भाखर क्षेत्र एवं गुजरात बॉर्डर क्षेत्र में निवासरत गरासिया जनजाति के त्योहारों में गणगौर का त्योहार सर्वाधिक महत्वपूर्ण एवं प्रमुख त्यौहार है। अगर हमें गरासिया संस्कृति का जीवंत दर्शन करना हो तो गणगौर के त्योहार में भाग लेकर उसे संपूर्ण कर सकते हैं। इस त्योहार को गरासिया जाति में गौर के नाम से जाना जाता है। सियावा गौर पूजा एवं मेला शिव-पार्वती के विवाह की पौराणिक मान्यता पर आधारित है जिसे गरासिया लोग उत्सव एवं सांस्कृतिक परंपराओं के संयोजन के रूप में मनाते हैं। अरावली की सुरम्य पहाड़ियों में बसे हुए सियावा गांव में पहले प्रमुख रूप से तीन फली है- माता का खेड़ा, जलाईया फली और सियावा गांव फली। वर्तमान में सियावा गांव मुख्य रूप से आठ फलीयों में फैला हुआ है- उपली जलाईया फली, निचली जलाईया फली, माताफली, मालियावास, सूलियाफली, चतराफली, खादराफली व लांबी रोड। इन फलियों में गरासिया जाति के वासिया, डूंगारचा, सिरमिया वासिया गोत्र के लोग रहते हैं। इन फलीयों के गरासिया बारी-बारी से हर वर्ष गणगौर के आयोजन का जिम्मा लेते हैं। इस बार गणगौर का आयोजन जलाईया फली द्वारा किया गया।

चित्र - 4. गौर नृत्य के लिए भोवाजी अनुमति देते हुए

गणगौर त्यौहार की शुरुआत चैत्र शुक्ल एकम् से शिव और पार्वती के प्रतीक क्रमश: ईसर एवं गौर की सेवा पूजा तथा व्रतानुष्ठान से शुरू होती है। इस दिन संबंधित फली का भोवाजी अन्य लोगों के साथ सियावा में मेला स्थल के पास स्थित माता जी के चबूतरे पर जाते हैं और वहां से देवी जी की ज्योति गाजे-बाजे तथा नृत्य-गान के साथ भोवाजी के

https://www.gapbhasha.org/

GAP भाषा
A MULTILINGUAL JOURNAL OF RESEARCH
(ISSN – 2582-8770)
Globally peer-reviewed and open access journal.

घर पर लाई जाती है और वहीं से गौर के उत्सव की शुरुआत होती है। गौर पूजा की शुरुआत से बीसवें दिन तक ईसर एवं गौर के बाल रूप की पूजा की जाती है। इस दौरान लोटे में नीम की फल फूल एवं पतियों वाली डालियां तथा अन्य वृक्षों एवं पौधों की फूलावली लगाकर सजाया जाता है। ऐसे ही अलग-अलग लोटे ईसर एवं गौर के प्रतीक के रूप में आलिये या किसी ऊंचे आसन पर स्थापित किए जाते हैं। ईसर एवं गोर के इस प्रतीक रूप के सामने अखंड दीपक जलाया जाता है। गणगौर पूजा के दौरान रोजाना पांच लड़के एवं पांच लड़कियां गणगौर का व्रत करते हैं। चैत्र शुक्ल एकम से बीस दिन इनके लिए बड़े पवित्र, गणगौर की पूजा अर्चना एवं हर्षोल्लास के दिन होते हैं। गणगौर की पूजा अर्चना के दौरान दिन भर गरासिया स्त्री-पुरुष, युवक-युवतियों का जमघट लगा रहता है। पूजा के दौरान 'गोलावण' से पहले समय-समय पर बधावा, सिलोलावा, जवारे बोना, लकड़ी डालना, पूजा एवं रात्रि जागरण आदि विभिन्न उत्सवों का आयोजन किया जाता है। इस दौरान गरासिया महिला एवं पुरुष, युवक-युवतियां व्रत रखते हैं तथा नाचते-गाते रहते हैं।

गरासिया जनजाति का गणगौर पर्व शिव और पार्वती के विवाह की कथा पर आधारित है। यह त्योहार 21 दिन लगातार चलता है। रात्रि जागरण के दौरान ईसर-गौर की काठ की मूर्तियां पारंपरिक आभूषणों से सुसज्जित करके पूजा-अर्चना की जाती है। यह पूरा त्योहार युवाओं के लिए उमंग उल्लास के साथ नए जीवन शुरुआत वाला है क्योंकि इस दौरान मेले में अविवाहित युवक-युवतियां अपने जीवनसाथी का चुनाव करके नए जीवन की शुरुआत करते हैं। बीस दिन तक चलने वाली पूजा अर्चना, व्रत अनुष्ठान व नृत्य-गान के दौरान युवक युवतियां एक दूसरे से परिचित होते हैं एवं समझते हैं। इस उत्सव के दौरान हर दिन रात युवक-युवतियां ईसर-गौर को अपने सिर पर उठाकर हर्षोल्लास के साथ नृत्य-गीतों माध्यम से अपनी श्रद्धा एवं भक्ति को व्यक्त करते हैं।

चित्र - 5. सियावा गौर मेले में सजे-धजे ईसर एवं गौर

इस सेवा पूजा के दौरान बाल ईसर एवं गौर बड़े होते होते बीसवें दिन पूर्ण रूप से युवा हो जाते हैं। सेवा पूजा के दौरान एक दिन को एक वर्ष के बराबर माना जाता है एवं बीसवें दिन गौर और ईसर बीस वर्ष की आयु के जवान होकर विवाह के योग्य हो जाते हैं। तब युवा ईसर एवं गौर के पारंपरिक ठाठ बाट, उल्लास एवं उमंग के साथ विवाह किया जाता है। जिसके साक्षी मेले में आए हुए सभी गरासिया स्त्री पुरुष, युवक-युवतियां होते हैं।

गौर पूजा उत्सव के बीसवें दिन युवा ईसर-गौर का बांस की लकड़ियों की खपचियों की सहायता से आदम कद शरीर बनाया जाता है। गौर को पारंपरिक गरासिया महिला वेशभूषा, फूलों व पत्तों की मालाओं से तथा ईसर को गरासिया पुरुष वेशभूषा- सफेद धोती व कुर्ता, सिर पर लाल रंग फेंटा, गले में सफेद रुमाल, पीठ पर कड़बंध व फूल पत्तों की मालाओं के साथ धनुष बाण से से अलंकृत किया जाता है। ईसर-गौर के आभूषण सोने चांदी की जगह फूल-पत्तों के होते हैं। जो गरासिया जाति की प्रकृति प्रियता को इंगित करता मुख के स्थान पर काष्ठ बने बनाए के मुंडे-मुंडी लगा दिए जाते हैं। इस पर पहले लाल पन्नी लगाकर उसे आंख एवं नाक का रूप दे दिया जाता है। जबकि वर्तमान में इस

https://www.gapbhasha.org/

GAP भाषा
A MULTILINGUAL JOURNAL OF RESEARCH
(ISSN – 2582-8770)
Globally peer-reviewed and open access journal.

तरीके के मुंडे-मुंडी तैयार लाए जाते हैं। उन पर कलर करके चेहरे की सजावट की जाती है। इनकी सजावट के लिए गरासिया स्त्री पुरुष कच्चे खजूर एवं पक्के खजूर, कच्ची एवं पक्की निंबोली, तथा महुआ के कच्चे एवं पक्के फलों को एकत्रित करके माला बनाकर पहनाई जाती है।

गौर मेला

चित्र - 6. गौर व्रत के दौरान ईसर-गौर को सिर पर उठा कर नृत्य करती गरासिया महिलाएं

सियावा का गौर मेला आबूरोड से 8 किलोमीटर दूर आबूरोड-अंबाजी राजमार्ग पर नाले के दोनों ओर हर वर्ष वैशाख कृष्णा पंचमी को हर्षोल्लास एवं धूमधाम के साथ भरता है। यह गरासिया जनजाति का सबसे बड़ा विशुद्ध मेला है। क्योंकि इसमें सिर्फ गरासिया जनजाति ही सम्मिलित होती है। ऐसी मान्यता है कि इस मेले को सिसोदिया वंश के द्वारा प्रारंभ किया गया था। सियावा गौर मेले में राजस्थान के सिरोही जिले के आबूरोड, पिंडवाड़ा, स्वरूपगंज, भाखर क्षेत्र, पंच देवल तथा उदयपुर के कोटड़ा, गोगुंदा, देवला, बेकरिया एवं मेवाड़ क्षेत्र के साथ गुजरात के डीसा, कोटेश्वर, अंबाजी, दांता, अमीरगढ़, इकबालगढ़ एवं आसपास के क्षेत्रों के गरासिया लोग उत्साह एवं उमंग के साथ भाग लेते हैं। मैंने 21 अप्रैल 2022 की वैशाख कृष्ण पंचमी को आयोजित इस मेले में भाग लेकर गणगौर पूजा एवं मेले से संबंधित जो ज्ञानार्जन किया उसका वर्णन यहां पर किया गया है।

चित्र - 7. सियावा मेले में धोक लगाकर ईसर-गौर के साथ

https://www.gapbhasha.org/

गरासिया सियावा का गौर मेला एक रात्रि व एक दिन आबूरोड-अंबाजी राजमार्ग पर भरता है। बीसवें दिन की संध्या के समय गौर लेने वाली जलाईया फली के भोपा के घर से ईसर-गौर की आकर्षक सवारी शुभ मुहूर्त में मेला स्थल की ओर निकलती है। गणगौर को नारियल और गुड़ के बने गुलगुलों की धूप दी जाती है। गुड़ के गुलगुले को गरासिया भाषा में 'भेरोलां' कहा जाता है। युवा लड़के लड़कियां ढोल, थाली, बांसुरी आदि वाद्य यंत्र बजाते हुए, नृत्य-गान करते हुए, ईसर एवं गौर की काष्ठ की सजी-सजाई मूर्तियों को बारी बारी से सिर पर रखकर नाचते-गाते हैं। वाद्य की यंत्रों धुन के साथ नाचते-गाते हुए मूर्तियों की एक-दूसरे से अदला-बदली करने का नजारा बड़ा ही मनमोहक, अनूठा एवं चित्त को आकर्षित करने वाला होता है। ईसर एवं गौर की सवारी जलाईया फली से चलकर रास्ते में निश्चित पड़ाव पर ठहरते हुए रात्रि होते-होते मेला स्थल पहुंचती हैं। जहां ईसर एवं गौर मूर्तियों को सिर पर रखकर अदला-बदली करते हुए गरासिया युवक-युवतियां वाद्य यंत्रों की धुन के साथ नृत्य करते हैं। यह दृश्य ऐसा लगता है मानो शिवपुरी यही उतर आई हो।

ईसर और गौर को नदी के किनारे बने ऊंचे निश्चित स्थान पर बिठा दिया जाता है। फिर मेले में आए हुए सभी गरासिया स्त्री पुरुष गणगौर को प्रसाद चढ़ाकर धोक लगाकर मंगल कामना करते हैं। रात्रि के समय यह मेला मुख्य सड़क पर भरता है। देर रात तक मंगलाचरण के साथ शुरू नृत्य-गान की महफिल लगातार चलती रहती हैं। सुबह एक बार फिर से ईसर एवं गौर की सवारी को उसी प्रकार नृत्य गान के साथ गरासिया समूह भोवाजी के घर ले जाते हैं जहां से दोपहर बाद 3:00 से 4:00 बजे के आसपास फिर से गणगौर की सवारी मेला स्थल पर नियत स्थान पर पहुंचती है। जहां फिर से पूजा अर्चना के बाद अंतिम नृत्य गान प्रारंभ होता है जो संध्या के समय तक चलता है। इधर मेला स्थल पर सुबह 10-11 बजे से गरासिया समूह एकत्रित होने लगते हैं जो अपने समूह में लड़के-लड़कियां नृत्य-गान करते हैं। वर्तमान समय में सियावा के गौर मेले डीजे का प्रचलन भी देखने को मिला जो समय के साथ एक नए परिवर्तन को दृष्टिगत करता है। गणगौर की सवारी का मुख्य कार्यक्रम परंपरागत वाद्य यंत्रों के साथ नृत्य गान द्वारा संध्या के समय तक चलता रहता है। जिसमें ईसर व गौर को युवा महिला एवं पुरुषों द्वारा बारी-बारी से सिर पर उठा कर वाद्य यंत्र की धुन पर घंटो हर्षोल्लास के साथ नृत्य-गान किया जाता है। गणगौर को विसर्जन से पहले नीचे नहीं उतारा जाता है। नदी एवं सड़क के दोनों ओर पर जगह-जगह युवा गरासिया लड़के लड़कियां अपने समूह में बिना वाद्य यंत्र के नाचते गाते रहते हैं। इस मेले का गरासिया समाज में महत्व इस बात से पता चलता है जिसमें हर गरासिया परिवार सभी सदस्यों के साथ भाग लेना अपना मूल कर्तव्य मानते हैं। इसकी मान्यता यह है कि मेले में गौर के दर्शन करने से उनके संकटों का निवारण होता है और पूरा वर्ष सुखमय व्यतीत होता है। संध्या के समय मूर्तियों के विसर्जन के साथ ही इस गौर मेले की समाप्ति होती हैं और लोग अपने अपने घरों को रवाना हो जाते। मूर्ति विसर्जन की प्रक्रिया को 'गोलावण' के नाम से जाना जाता है।

अनोखी विवाह परंपरा

आधुनिक शिक्षित एवं संपन्न समाज में जहां बिना शादी के लड़के-लड़की के साथ रहने अच्छा नहीं माना जाता और विवाह से पहले लड़का-लड़की अपनी पसंद से जीवनसाथी का चुनाव यदा-कदा ही कर पाते हैं ऐसे कुछेक दुर्लभ उदाहरण ही देखने को मिलते हैं। जिन्हें आधुनिक समाज में लिव इन रिलेशनशिप के नाम से जाना जाता है। ऐसे जोड़ों को मकान किराए पर देने को कोई तैयार नहीं होता है। हालांकि इनकी ये अनोखी विवाह परंपरा लिव इन रिलेशनशिप से काफी अलग है साथ ही इसे सामाजिक मान्यता भी प्राप्त है। गरासिया जनजाति आधुनिक समाज से शिक्षा, विकास आदि हर तरीके से पिछड़ी हुई है लेकिन प्रेम, व्यक्तिगत स्वतंत्रता और जीवनसाथी के चुनाव के मामले में आधुनिक समाज से कई गुना आगे हैं यह परंपरा अनादिकाल से इस जनजाति में चली आ रही है। इस मामले में गरासिया समाज आधुनिक समाजों से काफी आगे हैं क्योंकि इस समाज में लड़के-लड़कियों को जीवन में प्रेम की परिभाषा समझने, प्रेम का साक्षात्कार करने तथा अपने प्रेमाचार के सपनों को साकार करने का पूरा अवसर उन्हें प्रदान किया जाता है। वे विवाह से पहले भी स्वतंत्र होते हैं और विवाह के बाद भी स्वतंत्र रहते हैं। गरासिया जाति की प्रेम परंपरा अद्भुत है ऐसा कोई भी गरासिया लड़का-लड़की आपको नहीं मिलेगा जिसने अपने जीवन में प्रेम का आनंद नहीं लिया हो।

गरासिया जनजाति के त्योहार और मेले प्रेम के प्रतीक तथा युवा मेलों के नाम से जाने जाते हैं। ऐसे ही वैशाख महीने

https://www.gapbhasha.org/

GAP भाषा
A MULTILINGUAL JOURNAL OF RESEARCH
(ISSN – 2582-8770)
Globally peer-reviewed and open access journal.

में आने वाला गणगौर त्योहार एवं गौर मेला युवक-युवतियों के मिलन और जीवनसाथी के चुनाव का अवसर लेकर आता है। इसे गरासिया परंपरा के अनुसार युवक-युवतियों का मेला माना जाता है क्योंकि इसमें मेला व्यवस्था से संबंधित पंच-पटेल एवं भोवाजी को छोड़कर बड़ी उम्र के लोग भाग नहीं लेते। गौर मेले की सम्पूर्ण व्यवस्था गरासिया सामाजिक परंपरा पर आधारित है। इस 21 दिवसीय उत्सव के दौरान विवाह के इच्छुक युवक-युवतियां अपने समूह बनाकर नाचते गाते हैं। बीस दिवसीय गौर पूजा दौरान ऐसे युवा एक दूसरे को जानते एवं समझते हैं। यह त्योहार उनके लिए स्वयंवर के समान है जिसमें वे एक दूसरे से परिचित होकर भावी जीवन की योजना बनाते हैं। गणगौर त्योहार के द्वारा एक दूसरे से परिचित हो चुके युवक-युवती जिन्होंने गोत्र, सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति, रक्त संबंध आदि को जान लिया, ऐसे प्रेमी जोड़े वैशाख कृष्ण चतुर्थी के रात्रि के गौर मेले में अपनी पसंद के साथी के साथ भाग जाते हैं। रात्रि मेले के दौरान जगह-जगह ऐसे प्रेमी जोड़ों के समूह देखने को मिलते हैं। हालांकि वर्ष 2022 में जब मैंने इस मेले का निरीक्षण किया तो पाया कि शराब पीना, छेड़छाड़, जबरदस्ती आदि के कारण बढ़ते झगड़ों की वजह से अब रात्रि मेले में पहले के मुकाबले कम युवा लोग भाग लेते हैं और जल्दी ही वापिस चले जाते हैं। इस कारण इनके जीवन साथी का चुनाव मुख्यत: वैशाख कृष्ण पंचमी को दिन में आयोजित मेले में गोलावण की रस्म के बाद होता हैं।

खैचणा विवाह

चित्र - 8. सियावा गौर मेले में नृत्य-गान के स्वर व संकेत से जीवनसाथी का चुनाव करते युवक-युवतियां

खैचणा विवाह परंपरा गरासिया जनजाति की एक अनोखी परंपरा है। खैचणा का अर्थ नृत्य-गान करती युवती को उसके समूह से खिंचकर भगा ले जाना। सियावा गौर मेले में चहुंओर हर्षोल्लास से गोल समूह में नृत्य करते, संवादपरक विशिष्ट गरासिया भाषाशैली में प्रेमरस के गीत गाते हुए युवक-युवतियों के टोले देखने को मिलते हैं। यह युवाओं का प्रेम मेला हैं जिसमें वे रंग बिरंगी वेशभूषा, आभूषण आदि से सज-धज कर नृत्य एवं गीतों के माध्यम से अपने जीवनसाथी को रिझाते और अपनी ओर आकर्षित करते हैं। इन समूह गीतों में प्रेम प्रसंगों का वर्णन किया जाता है। इस बीस दिवसीय गणगौर उत्सव के दौरान या वर्ष भर में किसी युवक-युवती के बीच हुए प्रेम को उसके मित्र या सहेली गीतों के माध्यम से गाकर सार्वजनिक करती है जिससे इस अवसर पर उन्हें अपनी पसंद का जीवनसाथी मिल सके। अलग-अलग समूह में गीत गाते हुए युवक-युवती अन्य समूह के गीतों के स्वर को तुरंत ही समझ जाते हैं कि किसी युवक या युवती को अपने जीवनसंगी की तलाश है और किसने अपने जीवन-साथी का चुनाव कर लिया है इसे वे इन गीतों के माध्यम से समझ जाते हैं। जीवनसाथी की तलाश वाले युवक अधिकतर गीत गाती

https://www.gapbhasha.org/

हुई लड़कियों के समूह के मध्य खड़े होकर उनके संकेतों को समझते हैं। फिर युवक पसंदीदा युवती का हाथ खींचकर उसे समूह से दूर ले जाता है।

इस मेले की सबसे अद्भुत विशेषता यह है कि गरासिया युवक-युवतियां अपने जीवनसाथी के चयन के साथ ही अपने मित्र व सहेली के योग्य जीवन साथी के चुनाव में सहायता के लिए समूह में नृत्य करते हैं और गीत गाते हैं। समूह के गीतों, वेशभूषा एवं संकेतों आदि के माध्यम से ही युवाओं को पता चल जाता है कि किस युवक-युवती ने अपने जीवनसाथी का चुनाव कर लिया है और किसे इसकी तलाश है। जिससे किसी युवक द्वारा पसंद की गई युवती को कोई दूसरा युवक नहीं खींचता है। साथ ही अपने जीवन साथी की तलाश करने वाले युवक का साथी समूह पति की तलाश में नाचती हुई युवती के गोत्र व सामाजिक स्थिति का पता लगाते हैं। इस गौर मेले की अचंभित करने वाली विशेषता यह देखने को मिली कि इन प्रेम संबंधों में त्रिकोण देखने को नहीं मिलता। तथा कुछेक मामलों को छोड़कर ऐसे रिश्ते टिकाऊ होते हैं।

अपने जीवनसाथी के चुनाव के बाद युवक-युवतियां मेले मिठाई एवं आइसक्रीम खाने, विभिन्न झूलों में झूलने, प्रेमी के नाम एवं पसंद का गोदना गुदवाते और साथ में नाचते-गाते है। मेला विसर्जन के बाद युवती अपनी पसंद के युवक के साथ चली जाती है जिसकी जानकारी मेले में आई अपनी सहेली या साथिन के माध्यम से अपने परिजनों तक पहुंचाती हैं। युवती के किसी के साथ जाने की सूचना मिलने के बाद उसके परिवार जन खींच कर ले जाने वाले युवक की तलाश कराते हैं फिर युवक के परिजनों से पटेल एवं सामाजिक पंचायत की मदद से 'दापा' राशि निश्चित करके वसूलते हैं। पंचायत द्वारा निश्चित दापा राशि चुकाने एवं कुछ रस्मो रिवाज के बाद इस विवाह को सामाजिक मान्यता प्रदान कर दी जाती हैं। युवक द्वारा भगाए जाने के बाद यदि युवती को युवक एवं उसका घर आदि पसंद नहीं आता तो वह उसे छोड़कर अन्य इसी तरह का अन्य विवाह भी कर सकती हैं। इस समाज में युवती से प्रेम याचना करना, हंसी मजाक करना बुरा नहीं माना जाता जबकि आधुनिक समाज में तो ऐसी स्थिति में झगड़े एवं मारकाट की नौबत आ जाती है। साथ ही इस समुदाय में महिलाओं की सुरक्षा एवं सम्मान का पूरा ख्याल रखा जाता है जिससे इसी प्रकार की अप्रिय घटना देखने को नहीं मिलती। इनके त्योहार और मेले यौवन, सौंदर्य, नृत्य-गीत के केंद्र होते हैं जिनमें युवक-युवतियों को जीवनसाथी के चुनाव की पूर्ण स्वतंत्रता के बावजूद इस समाज में किसी प्रकार की गलत हरकत, झगड़े या जोर-जबरदस्ती देखने को नहीं मिलती। यहां का माहौल देखने पर ऐसा लगता है कि जैसे इंद्र सभा का आयोजन किया गया। शिव-पार्वती विवाह की कथानक आधारित यह त्योहार एवं मेला केवल प्रतीक के रूप में ही नहीं बल्कि दैवीय अनुशासन और उत्सव का रूप लिए होता है। पार्वती ने भी अपनी पिता की इच्छा के विरुद्ध अपनी पसंद से शिव जी का चुनाव अपने जीवनसाथी के रूप में किया था। इसी परंपरा को निभाते हुए गरासिया जनजाति अपने युवाओं को अपने जीवन साथी के चुनाव की स्वतंत्रता के साथ सहयोग भी प्रदान करती है।

निष्कर्ष

ईसर एवं गौर का बीस वर्ष का होने पर विवाह करना गरासिया जनजाति में प्रारंभ से ही विवाह की उम्र निश्चित होने की ओर संकेत करता जहां वर्तमान समय में कानून बनाकर सरकार द्वारा इसे निश्चित करने का प्रयास किया जा रहा है। हालांकि प्रेम विवाह की परंपरा के कारण वर्तमान समय में गरासिया जनजाति में छोटी उम्र में विवाह और छोटी उम्र में लड़कियों का मां बनना आम बात हो गई है।

गणगौर त्योहार गरासिया महिलाओं की सामाजिक स्थिति एवं उनकी स्वतंत्रता के दर्जे को स्पष्ट करता है। जहां गरासिया जवान युवक-युवतियां अपने जीवनसाथी का चुनाव अपनी पसंद एवं समझ के आधार पर करती हैं जिसे सामाजिक मान्यता भी प्राप्त है। इस प्रेम विवाह परंपरा के पीछे अध्यात्मिक विश्वास भी देखने को मिलता हैं। जिस तरीके से पार्वती अपने पति शिवजी का चुनाव अपनी पसंद से करती है ऐसे ही गरासिया युवतियां भी अपने पति का चुनाव अपनी पसंद से इन मेलों के दौरान ही करती है।

वर्तमान समय में हर क्षेत्र में पछड़ी कहीं जाने वाली गरासिया जनजाति आधुनिक सभ्य एवं सम्पन्न समाज से कई मामलों में बहुत ही आगे हैं। जहां आधुनिक सभ्य समाज में महिलाओं की स्थिति निम्नतर देखने को मिलती है दहेज प्रथा जैसी कुरीतियों ने उनकी स्थिति को दयनीय बना दिया है। विवाह के समय उनकी राय नहीं ली जाती है वही गरासिया जाति में युवतियां ही अपनी पसंद के पति का चुनाव स्वयं मेलों के दौरान करती हैं।

https://www.gapbhasha.org/

संदर्भ ग्रंथ सूची

[1] भानावत, महेंद्र - "कुंवारे देश के आदिवासी" - प्रथम संस्करण, मुक्तक प्रकाशन, उदयपुर, मार्च 1989, पृष्ठ- 59-61

[2] काबा, अर्जुनसिंह -"गौर मेला : सियावा" - 'ट्राईब' - खंड 35, अंक 3-4, जुलाई-दिसंबर 2003, पृष्ठ- 21-25

[3] राव, धनपतसिंह - "राजस्थान के दक्षिणांचल में जनजातीय मेले" - 'ट्राईब' - खंड 50, अंक 2-4, अप्रैल-दिसंबर 2018, पृष्ठ- 9,

[4] चौधरी, गोगराज - वहीं पृष्ठ- 45

[5] सिरोही दैनिक भास्कर, 22/04/2022

[6] प्रत्यक्ष मुलाकात एवं साक्षात्कार-

1) शंकरा/मुलाजी परमार गरासिया, सियावा, सिरोही, राजस्थान
2) डुंगराजी डूंगाइचा गरासिया, सियावा, सिरोही, राजस्थान
3) धर्मेश/भुराजी डूंगाइचा गरासिया, कोटेश्वर, गुजरात

https://www.gapbhasha.org/